बच्चों की कहानियाँ

उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनुपरा, सवाईमाधोपुर, राजस्थान से...

लड़की और राक्षस

एक लड़की थी। वह रोज़ जंगल जाती और जंगल में से लकड़ी बीनकर लाती थी और अपनी रोटी बनाती थी। तो एक दिन क्या हुआ कि लड़की के घर राक्षस आया और बोला, "लड़की मुझे रोटी दे दो।" लड़की ने बोला कि मेरे पास रोटी नहीं है। तो एक पेड़ पर बैठा बन्दर बोला, "मेरे पास है रोटी तो।" राक्षस दौड़ा-दौड़ा गया। जैसे ही राक्षस गया लड़की ने सोचा, "अब वो तो गया। अपन ऐसा करते हैं रोटी में ज़हर मिला देते हैं। जैसे ही रोटी खाएगा तो वह मर जाएगा।" लड़की ने ऐसा ही किया कि रोटी में ज़हर मिला दिया। राक्षस आया और बोला, "रोटी दे दो।" लड़की ने ज़हर मिली रोटी दे दी।

राक्षस खुश हो गया। बोला, "बेटी, तेरे लिए लकड़ी लेकर आता हूँ। लकड़ी लेकर आऊँगा तभी रोटी खाऊँगा।" राक्षस ने रोटी लड़की के पास रख दी और जंगल में लकड़ी लेने चल दिया। लड़की ने सोचा कि अपन ज़हर मिली रोटी फेंक देते हैं। बिना ज़हर की रोटी उसको दे देंगे। और एक-एक रोटी देकर लकड़ी मँगवा लेंगे।

लड़की अब खुश थी।

— चेतराम मीणा, उम्र 11 वर्ष

बीस गायों वाला लड़का

एक गाँव था। उसमें एक लड़का रहता था। उसके बीस गाएँ थीं। उनको वह रोज़ जंगल में चराने जाता था। एक दिन उसकी एक गाय जंगल में ही रह गई थी। उसने सोचा गाय को कोई जंगली जीव खा गया होगा। वह दुखी होकर जंगल की तरफ जाने लगा। उसको रास्ते में गाय दौड़ी घर आती दिखाई दी। तो वह उसको पकड़कर घर ले आया। उसको बाँधकर पुचकारकर कहा, "तुम कहाँ रह गई थीं?" तो गाय ने कहा, "मैं सरोवर में पानी पीने चली गई थी। पानी पीकर आई तो मैंने देखा कि वहाँ एक भी गाय नहीं थी। मैं हेरने (ढूँढने) लगी तो तुम कहीं भी नहीं दिखे। तो मैं वहाँ से रास्ता भटकते-भटकते गाँव की तरफ दौड़ी चली आ रही थी तो तुम रास्ते में ही मिल गए।

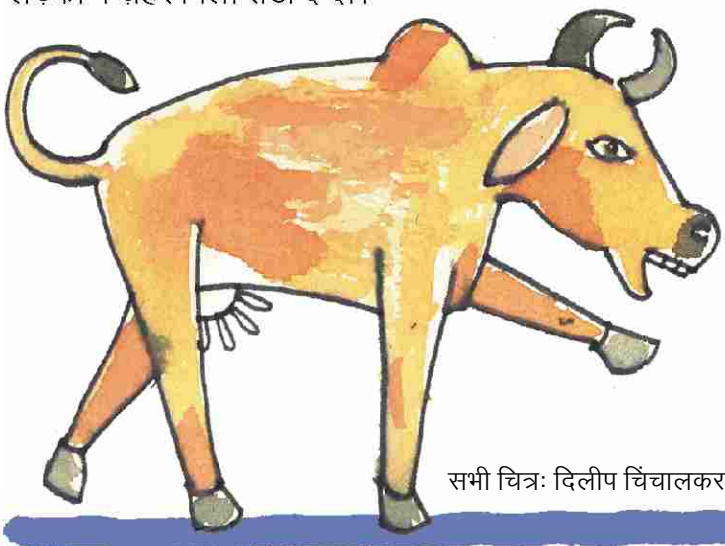

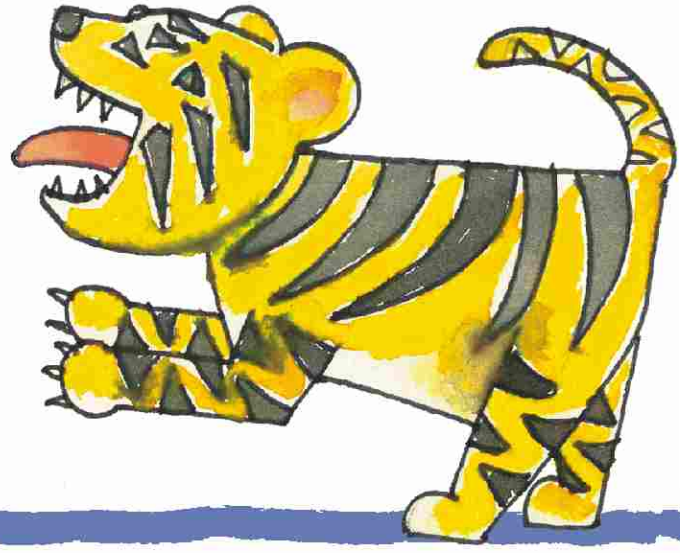

सभी चित्रः दिलीप चिंचालकर

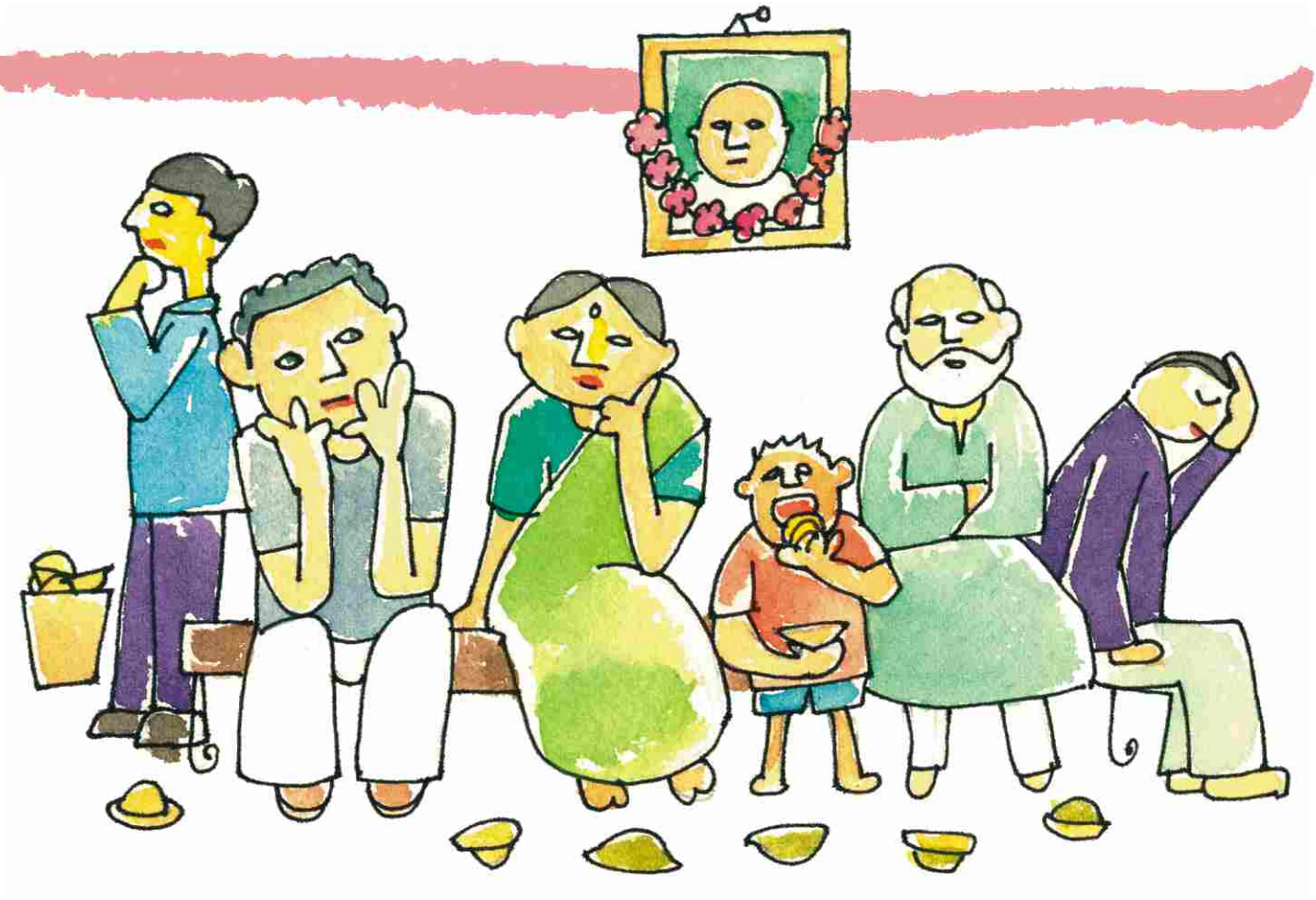

तुम मुझे घर ले आए।" फिर गाय ने लड़के से कहा कि मेरा बछड़ा कहाँ है? लड़के ने गाय के बछड़े को झोपड़ी में जाकर खोल दिया। गाय ने बछड़े को प्यार से सहलाया। आज जो घटना घटी थी उसको गाय ने अपने बच्चे से कह दिया। गाय के बच्चे ने कहा कि माँ तुम और गायों को छोड़कर कहीं मत जाया करो और रोज़ शाम को इन गायों के साथ आया करो। गाय ने सहलाकर कहा, "ठीक है बेटे।"

दूसरे दिन लड़का गायों को जंगल में ले गया। गाएँ चर रही थीं। अचानक एक शेर जंगल में से आ गया। पूरी गाएँ भाग गईं। वह गाय नहीं भागी क्योंकि वहाँ वह लड़का सोता था। गाय लड़के के चारों मेर (ओर) होने लगी। शेर की ओर गुर्राने लगी और लड़के को बार-बार चाटने लगी। वह लड़का जाग गया। उसने देखा कि शेर खड़ा गुर्रा रहा है तो वह झटपट पेड़ पर चढ़ गया। अब गाय और शेर में लड़ाई हुई। शेर गाय पर झपटा तो गाय ने शेर के सींग की मार दी तो शेर मर गया।

— मनकेश मीणा, उम्र 11 वर्ष

नुकता

एक गाँव था। उसमें एक ही परिवार था। उसमें कुल सदस्य पचास थे। और उनके बारह तो लड़की और तेरह लड़के थे। उनमें पाँच बूढ़ियाँ और पाँच बूढ़े थे। एक बूढ़ा मर गया क्योंकि उसको टीबी की बीमारी हो गई थी। तो उस परिवार के सब लोग चिल्लाने लगे। उस आदमी को रोते-रोते उठाकर मसान में ले गए। और वहाँ पर जलाने की तैयारी हो गई। रोने-रोने में कोई भी व्यक्ति लकड़ी व छाने (गोबर के कण्डे) नहीं ले गया। सब लोग पहाड़ में लकड़ी लेने गए। सब लोग एक-एक लकड़ी ले आए। और फिर उस बूढ़े का दाग लगा दिया। सब लोग घर आकर नहाने गए। नहाकर घर के अन्दर आ गए।

इस प्रकार दस दिन हो गए। लोग उसके नुकते (मृत्युभोज) की तैयारी करने लगे। सब लोगों ने मीटिंग करी। कहने लगे कि क्या मिठाई बनाएँ? कोई तो कहे कि मावा की बनाएँ, कोई कहे कि लड्डू-पूरी बनाएँ। एक बूढ़े ने कहा कि ऐसे लड़ाई मत करो, अपन तो खीर-जलेबी बनाएँ।

सब लोग बाज़ार जाकर सामान खरीदने लगे। सब सामान लेकर घर आ गए। घर आकर मिठाई बनाने की तैयारी करने लगे। सबने मिलकर मिठाई बना ली और गाँव वालों को नोता (निमंत्रण) दे दिया। फिर सब लोग जीमने आ गए। और फिर खा-पीकर चले गए।

सब लोगों को खिलाकर और वे भी खाकर सो गए। नुकता निकल गया। लेकिन फिर वे परेशान रहने लगे।

— मनराज मीणा, उम्र 12 वर्ष